

---

## Gangastotram 4

---

### गङ्गास्तोत्रम् ४

---

#### Document Information



---

Text title : Gangastotram 4

File name : gangAstotram4.itx

Category : devii, devI, nadI

Location : doc\_devii

Transliterated by : Anil Kumar Pandey anil.kumar17pandey at gmail.com

Proofread by : Anil Kumar Pandey anil.kumar17pandey at gmail.com

Description/comments : Ganga Jnana Mahodadhi compiled by Acharya Ramapada Chakravarty

Latest update : December 7, 2019

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

December 7, 2019

*sanskritdocuments.org*

---



गङ्गास्तोत्रम् ४



श्रीगणेशाय नमः ।

पर्वतभेदि पवित्रं जैत्रं नरकस्य बहुमतं गहनम् ।  
हरिमिव हरिमिव हरिमिव सुरसरिदम्भः पतन्नमत ॥ १ ॥

इयं चिद्रूपाऽपि प्रकटजडरूपा भगवती  
यदीयाम्भोविन्दुर्वितरति च शम्भोरपि पदम् ।  
पुनाना धुन्वाना निखिलमपि नानाविधमघं  
जगत्कृस्त्रं पायादनुदिनमपायात्सुरधुनी ॥ २ ॥

वाते वाऽपि यदङ्गसङ्गमवशाच्छ्रीशम्भुरूपप्रदे  
गौरी रुष्यति तुष्यति त्वहिपतिर्विन्ध्याटवी शोचति ।  
चन्द्रस्त्रस्यति कुप्यते हरिरपि ब्रह्मा परं शङ्कते  
सा गङ्गा निखिलं कलङ्कनिचयं भङ्गं तुरङ्गैर्येत ॥ ३ ॥

मुक्ताभा नृकपालशुक्तिषु जटावल्लीषु मल्लीनिभा  
वह्नौ लाजनिभा दृशौ मणिनिभा भोगोत्करे भोगिनाम् ।  
नृत्यावर्तविवर्तनेरितपयःसम्मूर्च्छनोच्छालिताः  
खेलन्ती हरमुर्धनि पान्तु भवतो गङ्गापयोविन्दवः ॥ ४ ॥

एषा धर्मपताकिनी तटसुधासेवावसनाकिनी  
शुष्यत्पातकिनी भगीरथतपःसाफल्यहेवाकिनी ।  
प्रेमारूढपिनाकिनी गिरिसुतासाकेकरालोकिनी  
पापाडम्बरडाकिनी त्रिभुवनानन्दाय मन्दाकिनी ॥ ५ ॥

इति गङ्गास्तोत्रं सम्पूर्णम् ।



*Gangastotram 4*

pdf was typeset on December 7, 2019



Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

